सं. थ्रो.वि./रोह/113-87/42494. — वृक्ति हरिशमा के राज्याल की राय है कि मार्किट कमेटी, वहादुरगढ़, जिला रोहतक के श्रमिक श्री महाबीर सिंह, पुत्र श्री धर्म सिंह गांव डा॰ मातण्ड, तहसील गोहाना, जिला सोनीपत तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीधौगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की घारा 10 की उपघारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गंई मक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 9641—1—श्रम 78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ गठित सरकारी अधिनियम की घारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवाद प्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिण्ट करते हैं जो कि उनत प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवाद प्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री महाबीर सिंह की सेवाग्रों का समापन न्यायीचिय तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं भो विव/एफ विव/एफ विव/१४ विव में में विव मे

श्रीर चूं कि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, श्रव, श्रोद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा श्रेदान की गई शिवतयों का श्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा उक्त श्रिधिनयम की धारा 7 क के श्रधीन गठित भौद्योगिक श्रधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद, को नीचे विनिर्दिष्ट मामला जो कि उक्त श्रवन्थकों तथा श्रिमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है, श्रथवा विवाद से मुसंगत श्रथवा सम्बन्धित मामला है न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेंतु निदिष्ट करते हैं:—

क्या श्री राय सिंह की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं ग्रो वि । एफ ही । 216-87 | 42508. — वूर्षि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं । प्रकाश रोड लाईन्स श्रा । लि । 18 | 5, मयुरा रोड, फरीदाबाद, के श्रीमिक श्री पारस नाथ राय, मार्फत भारतीय मजदूर संघ, शिवकर्ता भवन नीलम बाटा रोड, फरीदाबाद तथा प्रबन्धकों के मध्य इस में इस के बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई भौदोगिक विवाद है ;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते है;

इसलिए भन, भीद्योगिक विवाद श्रिष्ठितियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 क के अधीन गठित ओद्योगिक श्रिष्ठिकरण हिरियाणा, फरीदावाद, को नीचे विनिर्दिष्ट मामला जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवाद प्रस्त मामला है प्रयो विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है न्यायनिणैय एवं पंचाट 3 मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं:—

क्या श्री पारस नाथ राय की सेवाओं का समापन स्थायोचित तया ठीक है? यदि नहीं, तो बेह किस राहत का हकदार है ?

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, श्रव, श्रीचोशिक विवाद श्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा उक्त श्रधिनियम की धारा 7-क के श्रधीन गठित श्रीचोगिक श्रधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद, को नीचे विनिद्धित मामले जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिकों के बीच या तो विवादग्रस्त मामला/मामले हैं श्रथवा विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला/मामले हैं न्यायनिर्णय एवं पंचाट 3 मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं :—

क्याश्री रभेश कुमार पाठक की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?

दिनांक 29 श्रक्तवर, 1987

सं० घो० वि०/गुड़गांव/195-87/42666.—चू कि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि प्रबन्धक निदंशक, दी हरियाणा स्टेट फैडरेशन धाफ कन्जूमरज कोप्रेटिव हौलसेल स्टोरज लि०, एस. सी. घो. 1014-15, सैक्टर 22-बी, चण्ड़ीगढ़, (2) जिला प्रवन्धक, दी हरियाणा स्टेट फैडरेशन धाफ कन्जूमरज कोप्रेटिव हौलसेल स्टोरज लि०, कन्फेड़, एरिया धाफिस, मकान न० 371, मोहल्ला डकाटन, निकट डिस्ट्रीकट, कोर्ट नारनोल, के श्रमिक श्री शेर सिंह, पुत्र श्री सरदारा सिंह मार्फत श्री एस. के. गोस्वामी, 647/7, जवाहर नगर, न्यु रेलवे रोड, गुड़गांव, तथा प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई घोड़ोगिक विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिये, अब, श्रौद्योगिक विवाद प्रधिनियम, 1947, की घारा 10 की उपघारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गईं शिक्तयों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा उक्त श्रिधिनियम की घारा 7-क के अधीन गठित भौद्योगिक प्रधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद, को नीचे विनिर्दिष्ट मामले जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिकों के बीच या तो विवाद प्रस्त मामला/मानले हैं न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं:—

क्या श्री शेर सिंह, लिपिक की सेवा समाप्ति न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

संo. श्रो व व ं एफ॰ डी ं 129-87/42674.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं ॰ परफैक्ट मिटिक्स (इण्डिया) प्रा॰ लि॰, 13/6, मथुरा रोड, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री राजेन्द्र प्रसाद शर्मा, युन्न हुश मण्डी शर्मा मार्फत सीटू, 2/7, गोपी कालोनी, पुराना फरीदाबाद, तथा प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखिस मामले के सम्बन्ध में कोई भौद्योगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायिन र्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, ग्रब, श्रौद्योगिक विवाद श्रिष्ठिनियम, 1947, की घारा 10 की एएघारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा उक्त श्रिष्ठित्यम की घारा 7-क के श्रिष्ठीन गठित भौद्योगिक श्रिष्ठकरण, हरियाणा, फरीदावाद, को नीचे विनिर्दिष्ट मामले जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादशस्त मामला/मामले हैं श्रथवा विवाद से सुसंगत या सबंधित मामला/मामले हैं न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने स्मृ निर्दिष्ट करते हैं:—

क्या श्री राजेन्द्र प्रसाद की सेवाभ्रों का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० ओ ० वि०/हिसार/173-87/42585.—चंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० दी मिचंपूर सहकारी ऋण सेवा समिति लि०, मिचंपूर, तह ब्रांसी, जिला हिसार के श्रीमक श्री राजबीर सिंह, पुत्र श्री दरिया सिंह, मार्फत मजदूर एकता यूनियन, नागोरी गेट, हिसार तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीवोगिक विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते है ;

इसलिए, भव, श्रोदयोगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खंड (ग) द्वारा प्रदान की गई मिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रधिसूचन। सं 9641-1-श्रम 78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970, के साथ गठित सरकारी श्रधिनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को दिवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचें लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्विष्ट करते हैं जोकि उकत श्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है:---

क्या श्री राजवीर सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

दिनांक 2 नवम्बर, 1987

सं भो वि | कु ह | 61-87 | 42990 - चूं कि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं वी कुरुक्षेत्र सैन्ट्रल कोपरेटिव बैंक लि०, कुरुक्षेत्र, के श्रमिक श्री वाणु देव, पुत श्री दौलत राम, गांव व डा० कलवां, तहसील नरवाना, जिला जीन्द तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें 'इसके 'बाद लिखित मामले में कोई श्रौद्योगिक विवाद हैं ;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिणय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिये, श्रव, श्रीद्योगिक विवाद श्रिष्ठिनियम, 1947, की धारा 10 की उपुष्टारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए 'हस्यित्या के राज्यान इसके द्वारा सरकारी श्रिष्ठसूचना सं० 3(44)84-3-श्रम, दिनांक 18 श्रप्रैल, 1984 द्वारा उक्त श्रिष्ठनियम की धारा 7 के श्रिष्ठीन गठित श्रम न्यायालय, श्रम्ञाला को विवादप्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट 3 मास में देने हेतु निर्द्धित करते हैं जो कि उक्त 'प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रयवा सम्बन्धित मामला है:---

क्या श्री वागुदेत की सेत्राम्रों का समापन न्यायोचित तया ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहन ंका हकदार है ?

ग्रार० एस० भ्रश्रवाल,

जप-सन्विव, हस्यिशणा सरकार, श्रम⁻विभाग ।

श्रम विभाग

शुद्धि-पक्ष

दिनांक '16 नवम्बर, 1987

स. भ्रो.वी/एफ.डी./45499. —हरियाणा सरकार की अधिसूचना क्रमांक स.श्रो.वि.एफ.डी./57-85/34961, दिनांक व 28 अगस्त, 1985 जो कि हरियाणा राज्य पत्निका दिनांक 3 सितम्बर, 1985 के पृष्ठ 2193 पर छपा है के इशु में अंक ''700— 1200" के स्थान पर अक ''700—1250" पढ़ा जाये!

> मीनाक्षी स्नानन्द चौघरी, द्यायृक्त एवं सन्विव हरियाणाःसरकार, श्रम तथा रोजगारःकिभाग।